Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 10917540

Roll No. 23263005400
Total Mark 43/75.00

Exam BA_V_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010501T - Sahitya Shastra Aur Hindi Alochana

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	2/5						
1B	2/5						
1C	2/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	2/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	9/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	11/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 15/11/2025 Shift: III Room No.: 22
Paper Code: A010501T Subject: Hindi Year/Sem: 5th
Name of Candidate: Aditi Mishra
Roll No.: 2 3 2 6 3 0 0 5 4 0 0

COE Facsimile | Signature of Invigilator | Signature of Candidate: Aditi Mishra

PART-II

MARKS OBTAINED										
Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 1 0 5 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: BA Semester - 5th
Session: 2025-2026 Year/Semester: 5th
Subject: Sahitya Shastra aur Hindi Aalochana

Paper Code: A 0 1 0 5 0 1 T
Exam Date: 1 5 1 1 2 0 2 5
Name of Candidate: A D I T I M I S H R A
Father's Name: A J A Y K U M A R M I S H R A

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 4

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam: नियमित Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex. Student ○ | व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
10917540

A 0 1 0 5 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 2 1 8 1 5

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 3 0 0 5 4 0 0

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 5 0 1 T

Signature of Candidate: Aditi Mishra

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. ओएमआर में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method

Incorrect method

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्त पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर क निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा को कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scri immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e. Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pape should fill in status as Carry Over. Those appearing as E Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

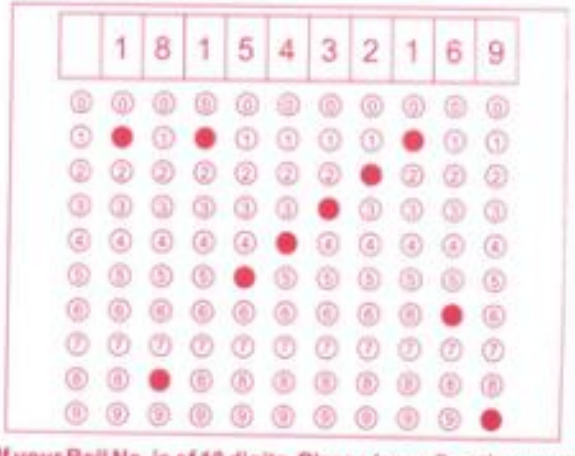

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three column

खण्ड- अ (लघु उत्तरीय प्रश्न)

1. (a) भारतीय काव्यशास्त्र का उद्भव और विकास प्राचीन समय में हुआ था।

भारतीय काव्यशास्त्र का उद्भव आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' से माना जाता है। प्राचीन समय में नाटक को काव्य की ही श्रेणी में रखा जाता था।
इस ग्रंथ में नाटक की समस्त शास्त्रीय जानकारी थी।
इसके बाद अनेक संस्कृत आचार्य आए जिन्होंने इसके विकास में अपना योगदान दिया।
इनमें आचार्य भामह का नाम आता है जो (अलंकार सम्प्रदाय) के प्रवर्तक है तथा इनका ग्रंथ (काव्यालंकार है)

इसके पश्चात् आचार्य (ध्वनि संप्रदाय) के प्रमुख आचार्य आए और उन्होंने (काव्य प्रकाश) नामक ग्रंथ लिखकर काव्यशास्त्र का विकास किया।

आचार्य वामन ने (काव्यालंकार सूत्रवृत्ति) लिखा और रीति संप्रदाय को प्रतिष्ठापित किया।

इसके अतिरिक्त आचार्य दण्डी (अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य) ने भी इसके विकास में योगदान दिया।
इनका प्रमुख ग्रंथ (काव्यादर्श) है।

Do Not Write anything in this Portion

(b) काव्य प्रयोजन का आशय है काव्य रचना का उद्देश्य।
यह उद्देश्य कवि और सहृदय दोनों के लिए हो सकता है।

प्रमुख काव्य प्रयोजन हैं—

- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
- लोक व्यवहार का ज्ञान
- लोक कल्याण
- समस्त कलाओं में निपुणता
- आयु में वृद्धि
- ज्ञान में वृद्धि
- मधुर उपदेश

विभिन्न विद्वानों के मत :—

1) आचार्य भरतमुनि (ग्रंथ - नाट्यशास्त्र)

"धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति"

अर्थात् :- धर्म, यश, आयु और ज्ञान में वृद्धि, उपदेश

2) आचार्य मम्मट (ग्रन्थ - काव्यप्रकाश)

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे"

अर्थात् :- यश अर्थ, लोकव्यवहार ज्ञान, कल्याण, मधुर उपदेश

3) आचार्य भामह (ग्रन्थ - काव्यालंकार)

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम्"

अर्थात् :- चतुर्वर्गफल, कलाओं में निपुणता, कीर्ति प्रीति

4) आचार्य वामन (ग्रन्थ - काव्यालंकार सूत्रवृत्ति)

इन्होंने दो काव्य प्रयोजन (दृष्टा :- कीर्ति, अदृष्टा - प्रीति)

(c) अलंकार सिद्धांत काव्य सिद्धांतो में प्राचीन सिद्धांत है।

अलंकार सिद्धांत का तात्पर्य है वह काव्य सिद्धांत जो काव्य सौंदर्य के मूल में अलंकार को प्रतिष्ठापित करता है।

अलंकार सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य भामह को माना जाता है जिनका प्रमुख ग्रंथ (काव्यालंकार) है।
इसके अतिरिक्त आचार्य दण्डी, रूद्रट भी इसी सिद्धांत के हैं।

अलंकार सिद्धांत में अलंकार को काव्य का शोभाकारक धर्म माना जाता है जो उसकी शोभा बढ़ाते हैं।
इसमें अलंकार का महत्व बताया गया है कि अलंकार कवि की सृजनात्मक शक्ति का प्रस्तुतीकरण करता है।
अलंकार काव्य रचना को प्रभावशाली बनाता है।

प्रमुख अलंकारो के नाम

अनुप्रास अलंकार → जिसमें स्व[illegible] की उत्पत्ति अधिक बार हो

यमक अलंकार

उत्प्रेक्षा अलंकार

मानवीकरण अलंकार - जिसमें प्रकृति का सजीव चित्रण हो

Do Not Write anything in this Portion

(d) ध्वनि संप्रदाय काव्य का वह संप्रदाय है जो ध्वनि को काव्य की आत्मा मानता है।

इस संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य आनंदवर्धन है जिन्होंने (ध्वन्यालोक) नामक ग्रंथ की रचना की।

इसके अतिरिक्त आचार्य मम्मट भी इस संप्रदाय के समर्थक आचार्य है।

ध्वनि संप्रदाय की मान्यताएँ

• ध्वनि संप्रदाय काव्य सौंदर्य के मूल रूप में और रस की उत्पत्ति के लिए ध्वनि को प्रतिष्ठापित करती है।
यहाँ ध्वनि का तात्पर्य है व्यंजना शब्द शक्ति से जो व्यंग्यार्थ के लिए उत्तरदायी होती है।

• दूसरी मान्यता है कि ध्वनि तीन प्रकार की हैं—
* रस ध्वनि * अलंकार ध्वनि * वस्तु ध्वनि

• तीसरी मान्यता है कि काव्य तीन प्रकार के होते हैं —

* उत्तम काव्य → जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्रधानता हो
* मध्यम काव्य → जिसमें व्यंग्यार्थ कम प्रभावशाली हो
* अधम काव्य → जिसमें सिर्फ वाच्यार्थ हो।

(e) वक्रोक्ति संप्रदाय नवीन संप्रदाय है।

इसके प्रवर्तक आचार्य कुन्तक है जिनका प्रमुख ग्रंथ है 'वक्रोक्ति जीवितम्'

इन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा माना है।

वक्रोक्ति का अर्थ है चमत्कारपूर्ण कथन। कवि जब काव्य रचना करता है तो सीधा कथन की जगह चमत्कारपूर्ण कथन का प्रयोग करता है।

Do not write anything in this portion

Do Not Write anything in this Portion

(1) काव्य गुण का तात्पर्य है काव्य की उन विशेषताओं से जो काव्य में रस का उत्कर्ष करती हैं जिससे काव्य सुन्दर और प्रभावशाली बनता है।
काव्य गुण रस की संपत्ति होती हैं।

काव्य गुण तीन प्रकार के होते हैं — ओज गुण, माधुर्य गुण और प्रसाद गुण
आचार्य आनंदवर्धन ने काव्य गुणों की संख्या 3 बताई है।
इसके अतिरिक्त
आचार्य भरतमुनि → 10 काव्य गुण
आचार्य दण्डी → 10 काव्य गुण
आचार्य वामन → 20 काव्य गुण

काव्य गुण

- ओज गुण → जिस काव्य रचना मे ओज गुण होता है उसमें ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ) के कठोर वर्ण, संयुक्तवर्ण, दीर्घसमासिक पद होते हैं।
जैसे → हिमाद्रि तुंग शृंग से
~~[illegible]~~ पुकारती प्रबुद्ध शुद्ध भारती
- प्रसाद गुण → इस गुण मे हृदय में शांति और आनंद का संचार होता है।
इसमें लघु समास का प्रयोग होता है।

- माधुर्य गुण → इस गुण के कारण हृदय में प्रेम और आनंद का संचार होता है।
कोमल वर्णों का प्रयोग
कठिन शब्द और समासिक पद का निषेध

(9) 'नाट्यशास्त्र' - आचार्य भरतमुनि का प्रमुख ग्रंथ है जिसे उन्होंने 400 ई. पूर्व लिखा था।

इस नाट्यशास्त्र में नाटक और उसके सभी तत्व व कलाएँ जैसे - अभिनय, पात्र, संवाद, रंगमंच आदि की शास्त्रीय जानकारी प्राप्त होती है। इसे पंचमवेद भी कहते हैं।

नाट्यशास्त्र का उद्भव

प्राचीन मान्यता के अनुसार एक बार मनुष्य को पीड़ा में देखकर देवराज इन्द्र ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि वह लोगों के मनोरंजन के लिए पाँचवें वेद की रचना करें। तब ब्रह्मा जी ने

ऋग्वेद से पाठ्य
यजुर्वेद से अभिनय
सामवेद से गायन
अथर्ववेद से रस

इन सब वेदों से कुछ न कुछ तत्व लेकर पंचम वेद जिसे नाट्यशास्त्र कहते हैं उसकी रचना की। इसके बाद इसका प्रचार-प्रसार करने का दायित्व आचार्य भरतमुनि को दिया।

इस ग्रन्थ में नाटक की समस्त जानकारी मिलती है। इसमें बताया गया है कि नाटक के सफल होने के लिए सिर्फ लेखक ही नहीं अपितु पात्र व अभिनय की भी भूमिका होती है। आज के नाटकों का निर्माण इसी ग्रंथ के आधार पर किया जाता है।

h) टी ० एस इलियट पाश्चात्य काव्यशास्त्र के आचार्य हैं।

इन्होंने निर्वैयक्तिता नामक सिद्धांत से काव्य जगत में एक नए सिद्धांत की नींव रखी।

Do Not Write anything in this Portion

(*) हिन्दी आलोचना एक गद्य विधा है जिसमें काव्य के गुण - दोष, सकारात्मक - नकारात्मक पहलू का विश्लेषण, मुल्यांकन, निरीक्षण व परीक्षण किया जाता है।
हिन्दी आलोचना को समालोचना, समीक्षा, टीका-व्याख्या, व्याख्या भी कहते हैं।
आलोचना की व्युत्पत्ति आ उपसर्ग + लुच धातु + ल्युट और टाप प्रत्यय से हुई है।

आलोचना रचना का अन्य कृतियों व समाज में महत्व बताती है। रचना में अगर राग तत्व होता है तो आलोचना में बुद्धि तत्व।
"आचार्य रामचंद्र शुक्ल" ने आलोचना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्हीं के आधार पर आलोचना के तीन चरण माने जाते हैं।

- शुक्ल पूर्व युग → भारतेन्दु युग (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, अम्बिका दत्त)
  → द्विवेदी युग (आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, भगवान दीन लाला, मिश्र बन्धु, कृष्ण बिहारी मिश्र)
- शुक्ल युगीन – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. राम कुमार वर्मा, श्यामसुन्दर दास, बाबू गुलाब राय
- शुक्लोत्तर – हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, नंद दुलारे वाजपेयी

इसी युग में आलोचना के प्रकार आए।

Paper Code A 0 1 0 5 0 1 T

खण्ड – ब

दीर्घ प्रश्न –

उत्तर (2) काव्य की आत्मा

काव्य की आत्मा से तात्पर्य है काव्य की उस आंतरिक विशेषता से जो काव्य को जीवन प्रदान करती है।
प्राय: सर्वाधिक मत में रस को काव्य की आत्मा माना जाता है।
परन्तु विभिन्न संप्रदायों के आचार्य इस संदर्भ में अपने – अपने मत देते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र में 6 संप्रदाय हैं –

• रस संप्रदाय → प्रवर्तक – आचार्य भरतमुनि
इस संप्रदाय में रस को काव्य की आत्मा माना जाता है।
रस वह आलौकिक आनंद है जो विभाव, अनुभाव व संचारी भाव के संयोग से नाटक व कला के माध्यम से सहृदय के हृदय में उत्पन्न होता है।

• अलंकार संप्रदाय → प्रवर्तक – आचार्य भामह

इस संप्रदाय में अलंकार को काव्य की आत्मा तो नहीं माना गया परन्तु काव्य सौंदर्य में वृद्धि करने वाले शोभाकारक धर्म माना है।
जिस प्रकार अग्नि का प्रभाव ऊष्णता

से होता है इसी प्रकार काव्य रचना का प्रभाव अलंकार से होता है।

• ध्वनि संप्रदाय → प्रवर्तक - आचार्य आनंदवर्धन

इस संप्रदाय में ध्वनि को काव्य की आत्मा माना जाता है। इसमें ध्वनि का तात्पर्य है - व्यंजना शब्द शक्ति द्वारा उत्पन्न व्यंग्यार्थ से जो रस की उत्पत्ति में सहायक होता है।

• रीति संप्रदाय → प्रवर्तक - आचार्य वामन

इस संप्रदाय में 'रीति' को काव्य की आत्मा माना जाता है। इस संप्रदाय को गुण संप्रदाय भी कहते हैं। आचार्य वामन के अनुसार "विशिष्ट पद रचना रीति" यहां विशिष्ट पद से तात्पर्य गुण से युक्त पद

• वक्रोक्ति संप्रदाय → प्रवर्तक - आचार्य कुन्तक

इस संप्रदाय में वक्रोक्ति को 'काव्य की आत्मा' माना जाता है। वक्रोक्ति का तात्पर्य है - चमत्कारपूर्ण कथन

• औचित्य संप्रदाय → प्रवर्तक - आचार्य क्षेमेन्द्र

इस संप्रदाय में औचित्य को काव्य की आत्मा माना जाता है। उचित का भाव ही औचित्य है। इसमें रस, भाव, अलंकार, गुण के बीच में संतुलित व्यवस्था की बात होती है।

Do not write anything in this portion

Do Not Write anything in this Portion

काव्य का स्वरूप

विभिन्न विद्वानों व आचार्यों ने काव्य के स्वरूप को लेकर मत दिया है—

संस्कृत के आचार्य—

• आचार्य भामह — ग्रन्थ (काव्यालंकार)

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"

अर्थात् शब्द और अर्थ सहित भाव ही काव्य है।

यहाँ सहित के दो अर्थ हैं —

प्रथम :- साहित्य

द्वितीय :- लोकमंगल करने वाला

• आचार्य दण्डी — ग्रन्थ (काव्यादर्श)

"शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्नापदावली"

अर्थात :- इष्ट अर्थ से बना पद केवल शरीर मात्र है।

• आचार्य मम्मट — ग्रन्थ (काव्यप्रकाश)

"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि"

अर्थात् दोष हीन, शब्द और अर्थ से युक्त, गुणों से मंडित तथा कभी-कभी अलंकार रहित रचना काव्य है।

. आचार्य विश्वनाथ :- ग्रन्थ (साहित्य दर्पण)

" वाक्यं रसात्मकं काव्यं"
अर्थात रस से युक्त वाक्य ही काव्य है।

. आचार्य पंडितराज जगन्नाथ :- ग्रन्थ (रस गंगाधर)

" रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम"

अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाली शब्द काव्य है।

हिन्दी के आचार्यों के मत

. आचार्य रामचंद्र शुक्ल :- जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था को ज्ञानदशा कहते हैं उसी प्रकार ह्रदय की मुक्तावस्था को रसदशा कहते हैं, ह्रदय की इस मुक्ति साधना के लिए वाणी जो शब्द विधान करती है वही काव्य है।

. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी :- काव्य वह प्रभावशाली रचना है जो पाठक और श्रोता के ह्रदय में आनंद का संचार करती है।

. जयशंकर प्रसाद → काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभुति है।

Do Not Write anything in this Portion

. सुमित्रानंदन पंत → काव्य हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।

. मुंशी प्रेमचन्द → काव्य जीवन की आलोचना है।

पाश्चात्य आचार्यों के मत

. ड्राइडन → काव्य सुस्पष्ट संगीत है।

. मैथ्यू आरनॉल्ड → काव्य मूल रूप से जीवन की आलोचना है।

. कॉलरिज → सर्वोत्तम क्रम में सर्वोत्तम शब्द काव्य हैं।

. विलियम वर्ड्सवर्थ → काव्य हमारे प्रबल भावनाओं की सहज [illegible] है।

Paper Code A 0 1 0 5 0 1 T 15

खण्ड - स

उत्तर (7)

पाश्चात्य विद्वान मार्क्स और ऐंजिल्स ने "कम्यूनिष्ट घोषणापत्र" का प्रकाशन किया था जिसमें उन्होंने मार्क्सवाद के विषय में बताया था।

मार्क्सवाद वह विचारधारा है जो समन्वयवादी समाज की कल्पना करती है।
समन्वयवादी समाज का तात्पर्य है कि ऐसा समाज जो पूँजीपती और शोषित में न बँटा हो अपितु इनके बीच में वर्ग संघर्ष हो व क्रांति हो और समाज में कोई दुःखी, पीड़ित न हो।
पूँजीपति सदियों से अपने फायदे के लिए शोषितो का प्रयोग करते आए हैं।

मार्क्सवादी आलोचना

मार्क्सवादी आलोचना में मार्क्सवाद के सिद्धांत को आधार बनाकर काव्य रचना का मुल्यांकन किया जाता है।
इस आलोचना पद्धति में यह देखा जाता है कि जो रचना है उसने अपनी युगीन परिस्थितियों के साथ कैसा न्याय किया, रचनाकार ने शोषित वर्ग का पक्ष लिया या नहीं, शोषित वर्ग की समस्या व समाधान बताया या नहीं।

Paper Code A 0 1 0 5 0 1 T

डॉ. रामविलास शर्मा प्रमुख मार्क्सवादी आलोचक हैं।

इस आलोचना में यह देखा जाता है कि रचना इतिहास, राजनीति व अर्थव्यवस्था को प्रकाशित करती है या नहीं।

यह आलोचना इस बात का विवेचन करती है कि रचना कितनी सफल है समन्वयवादी समाज के निर्माण में।

समाज वर्गों में बँटा होता है - पूँजीपति व शोषित और ऐसे समाज में जो कला उत्पन्न होगी वह भी वर्गवादी होगी अतः रचना का औचित्य है कि वह केवल मनोरंजन के लिए नहीं अपितु राजनीति व अर्थव्यवस्था का भी साधन हो।

इस कारण से लोगों को ज्ञान प्राप्त होगा।

डॉ. रामविलास शर्मा के तीन आलोचनात्मक ग्रंथ हैं -

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनकी हिन्दी आलोचना

प्रेमचन्द और उनका युग

कुछ मार्क्सवादी आलोचकों ने तुलसीदास जी की रचना में सामंतवाद की झलक बताया था जिसका विरोध डॉ. शर्मा ने 'तुलसी साहित्य में सामंत विरोधी मूल्य' नामक निबन्ध में किया।

मार्क्सवादी आलोचक कबीरदास जी की रचनाओं को श्रेष्ठ मानते थे।
इनके अनुसार कबीरदास जी की रचनाओं में जातिगत भेदभाव के प्रति क्रोध है।

ऐतिहासिक और भौतिकवाद का सिद्धांत समाज के विकास की कहानी बताता है जो आर्थिक संबंधों पर निर्भर है।

आलोचनाशास्त्र में इस आलोचना की अत्यधिक भूमिका व महत्वता है।
रचना तभी श्रेष्ठ होगी जो सामाजिक समस्याओं को उजागर करे।

Paper Code

18

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

19

X

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

21

X

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code